अक्षय क्रांति

अंक : जनवरी से जून , 2018 खंड : अर्धवार्षिक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
INDIAN RENEWABLE ENERGY DEVELOPMENT AGENCY LTD
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान/ A Government of India Enterprise)

इरेडा IREDA

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री के. एस. पोपली

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन

महाप्रबंधक (मा. संसा.)

संपादक मंडल

श्री नरेश वर्मा

वरि. प्रबंधक (मा.संसा.)

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, सहा. हिंदी अधिकारी

श्रीमती शशि बाला पपनैं, सहा. अधिकारी (जनरल)

सुश्री तुलसी, वरि. कार्यालय सचिव

अक्षय क्रांति

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	रचना वर्ग	लेख/रचयिता सर्वश्री / सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश		अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	2
2.	मानव संसाधन प्रोफेशनल हेतु उभरती हुई चुनौतियाँ और अवसर	-	डॉ. पी. श्रीनिवासन	3-6
3.	बेटियाँ	कविता	आकांक्षा	7
4.	चाँद	कविता	संगीता श्रीवास्तव	8
5.	सर्वश्रेष्ठ इरकॉन गीत	गीत	प्रवीण कुमार	9-10
6.	प्रदूषण उन्मूलन दोहे	दोहे	जयश्री सबनानी	11
7.	अंधविश्वास एक रोग	लेख	अलका कुमार	12
8.	जिंदगी	कविता	डॉ. हीरा मीना	13
9.	इरेडा राजभाषा गतिविधियाँ	विवरण	राजभाषा अनुभाग	14

के.एस.पोपली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

संदेश

किसी भी व्यक्ति या समाज के लिए सबसे सहज और सरल अपनी मातृभाषा या देश की भाषा ही होती है। जो भाषा जितना अधिक अन्य भाषाओं के शब्दों का आत्मसात करने की उदारता एवं क्षमता रखती है, वह उत्तरोत्तर उतनी ही अधिक समृद्ध एवं सरस हो जाती है। हिंदी एक ऐसी ही भाषा है जिसने इतिहास के पलटते पन्नों के साथ-साथ अपना स्वरूप बनाए रखते हुए नए शब्दों को अपनाया। अपने वर्तमान स्वरूप के कारण ही हिंदी में कार्य करना अति सहज और सरल है।

इरेडा में हिंदी कार्यान्वयन और अनुपालन से संबंधित गतिविधियों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है। इन गतिविधियों से कार्यालय में हिंदीमय वातावरण का निर्माण होता है और कर्मियों की हिंदी के प्रति अभिरुचि जागृत होती है। इरेडा में कर्मियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई है।

कार्यालयी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि सभी इसे अपना सकें। यह याद रखना आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य राजकीय कार्य मूल रूप से हिंदी में करना है। मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा।

इसी दिशा में इरेडा की 'ई-पत्रिका' पिछले 4 वर्षों से प्रकाशित की जा रही है जिसमें विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक-आर्थिक और राष्ट्रीय आयामों का समावेश कर हर अंक को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

ई-पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सभी इरेडा कर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका को पढ़कर लाभान्वित हों और इसके आगामी अंक को और अधिक रोचक बनाने के लिए अपने-अपने लेखों/रचनाओं का योगदान अवश्य दें।

(के.एस.पोपली)

डॉ. पी श्रीनिवासन
महा प्रबन्धक (मानव संसाधन)
भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

मानव संसाधन प्रॉफेश्नल हेतु उभरती हुई चुनौतियां और अवसर

आमंत्रम् आकर्षणम् नास्ति नास्थितमूलम् अनुशाधम्
आयोग्या: पुरूषोनास्ति योजाकास्थाथरा दुर्लभा:

जिस प्रकार प्रत्येक अक्षर में एक मंत्र होने की क्षमता होती है, वैसे ही किसी जड़ में दवा बनने की क्षमता होती है। उसी प्रकार ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसमें कुछ क्षमता और योग्यता विद्यमान न हो। डर केवल उनसे है, जो उन लोगों के भीतर छिपी हुई क्षमता को वास्तविक बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित और विकसित न कर सकते हैं। यह एचआर का कार्य होता है कि वह किस प्रकार से बिना किसी भी पक्षपात के अपने सभी कर्मचारियों के लिए एक स्वस्थ और प्रतिस्पर्धी वातावरण का निर्माण करता है। यह किसी जॉब के ले कोई उपाधि नहीं है, जोकि आपको किसी संगठन में रहते हुए प्राप्त होती है। नेतृत्व किसी जॉब के लिए कोई उपाधि नहीं है - इसका संबंध कार्रवाई और व्यवहार करने से है।

वर्तमान समय में धन मायने रखता है। इसका यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि दूसरी वस्तुएं महत्वपूर्ण नहीं है। किसी भी सभ्यता को नियंत्रित करने में धन एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। अर्थवाद इसमें निहित सभी हावी शक्ति के कारण, मानव सभ्यता हेतु अच्छा हो अथवा बुरा, लेकिन आज शायद यह अकादमिक बहस का केवल एक बिंदु ही रह गया है। इसमें भी, मांग के बिना प्रदान किए गए धन की भी सराहना नहीं की जाएगी। पुरापाषाण युग के होमोसैपियंस, एक समूह के रूप में रहते तथा कार्य करते थे। वे ऐसा करना ही जारी रखेंगे। इन विशिष्टताओं को बदला नहीं जा सकता है। इसलिए, पूर्व परामर्श सभी को लाभ प्रदान करेगा।

इस विषय को एलपीजी (उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण) परिप्रेक्ष्य में देखना आवश्यक है। वैश्विक अर्थव्यवस्था और व्यापारिक गतिविधियों के निचले स्तरों के साथ एकीकरण को बनाए रखना प्रत्येक राष्ट्र के लिए एक चिंता का विषय है। मर्जर्स/अभिग्रहण, अधिग्रहण, डिमर्जर्स/पुनर्गठन वे दैनिक कार्य हैं जोकि तत्काल मध्यवर्ती समय सीमा में निचले स्तरों में सुधार के लिए बाजारीय उपस्थिति को सचेत करने, पुनरुत्थान तथा/अथवा बढ़ावा देने के लिए लक्षित हैं। विश्व में यूएस की अर्थव्यवस्था एक महाशक्ति के रूप में है। अन्य सभी राष्ट्र, स्वेच्छा या किसी भी दूसरे कारणों से

इस महाशक्ति से काफी प्रभावित होते जा रहे हैं... यह अर्थशास्त्र को डगमगाने वाला सबसे निचला स्तर है और ऐसी कोई भी विचारधारा नहीं है, जोकि सोवियत संरचना को तोड़ने और यूरोप में समाजवादी राज्यों से दूर जाने के कारणों की ओर लक्षित हो। चीनी साम्यवादी ढांचे ने स्वयं को अस्तित्व में बनाए रखा है, लेकिन उनके पास भी पूंजीवाद का आधार है और इसलिए वह सक्रिय रूप से विश्व व्यापार संगठन का हिस्सा बनने का प्रयास करता रहा है। विश्व का प्रत्येक देश अपने घरेलू उद्योगों को लाभ पहुंचाने, अपने लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने और अपने नागरिकों के लिए रोजगार की उत्पत्ति को सुविधाजनक बनाने की उम्मीद के साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सुधार करने की इच्छा रखता है। 7 फरवरी, 1992 को मास्ट्रिच संधि पर 12 देशों (बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, आयरलैंड, इटली, लक्समबर्ग, नीदरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और यूनाइटेड किंगडम) के प्रतिनिधि ने अपने हस्ताक्षर किए। इसके बाद, इन सभी देशों की संसद ने कुछ मामलों में जनमत संग्रह के द्वारा इस संधि को मंजूर कर लिया तथा 1 नवंबर, 1993 को इस संधि को अधिकारिक तौर पर लागू किया गया और इस प्रकार अधिकारिक रूप से यूरोपियन यूनियन (ईयू) का गठन हुआ। इसके उपरान्त, 16 दूसरे देश भी यूरोपीय यूनियन में शामिल हो गए तथा इन सभी देशों ने मास्ट्रिच संधि में या इसके बाद की अनुसरण की गई संधियों में निर्धारित नियमों को अपनाया। 1991 के बाद, भारत ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारतीय बाजारों में प्रवेश करते हुए देखा, उनकी यह उपस्थिति इससे पहले नहीं थी, उन्होंने विभिन्न तरीकों के माध्यम से भारतीय बाजारों में प्रवेश किया, जिनमें निर्यात, फ्रैंचाइजिंग, भारतीय उद्योगों के साथ सहभागिता और कुछ मामलों में भारत में अपनी विनिर्माण तथा/अथवा व्यापारिक सुविधा को स्थापित करना, शामिल था। इसके परिणामस्वरूप, कुछ घरेलू उद्योगों को हानि हुई और इन्हें अधिगृहित कर लिया गया अथवा बंद कर दिया गया। इसी दौरान, हमने नए एवं पुराने घरेलू उद्योगों को इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा और प्रगति करते हुए देखा तथा इसके साथ ही भारतीय बाजार में प्रवेश करने वाली अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडेड उत्पादों एवं सेवाओं तथा बहुराष्ट्रीय एवं पार-देशी कंपनी को कड़ी टक्कर देते हुए भी देखा। अर्थवाद इसमें निहित सभी हावी शक्ति के कारण, मानव सभ्यता हेतु अच्छा हो अथवा बुरा, लेकिन आज सभी व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए शायद यह अकादमिक बहस का केवल एक बिंदु ही रह गया है, क्योंकि यह अवधान अस्थिर प्रतीत होता है।

2016 से हम संरक्षणवाद की एक नई प्रवृत्ति देख रहे हैं, जोकि कुछ देशों के द्वारा उनके घरेलू उद्योगों तथा उनके नागरिकों की नौकरियों को सुरक्षा प्रदान करने वाली सुविधाओं की नीतियों को अपनाने के प्रयासों के फलस्वरूप उभरी है। हम सभी 'ब्रेक्जिट' से अवगत हैं, जब जून 2016 में, यूनाइटेड किंगडम (यूके) के नागरिकों ने एक जनमत संग्रह के माध्यम से 29 मार्च, 2019 को यूरोपीय यूनियन छोड़ देने के लिए वोट दिया था। हम, 2016 में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा अपनाई गई उन संरक्षणवादी नीतियों की प्रवृत्ति को भी देख रहे हैं। इस प्रकार के उदाहरणों के कारण शायद वैश्विक प्रतिस्पर्धा से अपने घरेलू उद्योगों के लिए संरक्षणवाद को प्राप्त करने के लिए दूसरे देशों द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियों में भी बदलाव आना लक्षित होगा।

कुछ ऐसे प्रश्न जिनके उत्तर देने की आवश्यकता है:

- क्या हम जागरूक है कि क्या हो रहा है?
- क्या हम वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर संचालित होने वाले आर्थिक बलों के बारे में अवगत हैं?

- क्या हम अपनी आंतरिक शक्ति और कमजोरी के प्रति पूरी तरह से अवगत हैं?
- क्या हम किसी संगठन में अथवा एक विशेषज्ञ के रूप में उभरती हुई चुनौतियों पर विचार करते हैं?
- क्या हम नए परिदृश्य से निपटने के लिए हमारी प्रवृति एवं कौशल के अनुसार उससे समायोजन स्थापित कर सकते हैं?

आइए, इस काल्पनिक स्थिति को नियंत्रित करने के लिए खुद को तैयार करते हुए इन सभी सवालों के अपने उत्तर खोजने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करें। इन चुनौतियों को व्यक्तिगत और पेशेवर अस्तित्व के लिए खतरा नहीं बनना चाहिए अथवा इससे बचने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इनके लिए जागरूकता ही पहला कदम है। स्वयं को इसके अनुकूल बनाना और प्रतिद्वंद्वी कौशल हासिल करना, इसका अगला चरण है। समय के साथ स्वयं को समायोजित करना और परिवर्तित परिदृश्य के साथ समरसता में रहना, व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों रूपों में दीर्घकालिक कल्याण हेतु आवश्यक है।

संरक्षणवाद में वृद्धि, रिवर्स ब्रेन ड्रैन, युद्धपोत कूटनीति, सरकारी नीतियों में परिवर्तन, चुनौतीपूर्ण जनसांख्यिकीय रूपरेखा ने व्यापार में अधिक विशाल चुनौतियों का निर्माण किया है। वीयूसीए - (अस्थिरता, अनिश्चितता, जटिलता और अस्पष्टता) स्थिति को नवाचार, सामरिक नेतृत्व, कौशल वृद्धि और सतत विकास के साथ कार्यवाही करनी चाहिए। एक्सटर्नल जनरल तथा कार्य वातावरण में परिवर्तनों को उद्योगों द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है; इसलिए सभी उद्योगों को इन परिवर्तनों को सीखने और समझने की आवश्यकता है कि इन परिवर्तनों को कैसे अनुकूलित किया जाएं, साथ ही इस बात को ध्यान में रखना है कि उनको अस्तित्व में तो बने ही रहना है किंतु इसी के साथ ही उन्हें अपने सतत विकास को सुनिश्चित करते हुए आगे भी बढ़ना है। विकास को प्राप्त करने के लिए, सभी उद्योग एसडब्ल्यूओटी (शक्ति, कमजोरी, अवसर और जोखिम) विश्लेषण के माध्यम से प्रत्येक योग्य हितधारकों की अपेक्षाओं तक पहुंच बनाते हैं, जिसके बाद मौजूदा और संभावित भविष्य संसाधनों के आधार पर व्यवहार्यता विश्लेषण सहित लघु, मध्यम और दीर्घकालिक लक्ष्यों / उद्देश्यों को संयोजित करते हुए, उन्हें पूरा किया जाता है। कई संगठन वर्तमान में, उद्योग के लिए काम करने वाले व्यक्तियों को सौंपे गए कार्यों के साथ अपनी व्यावसायिक रणनीतियों के प्रत्येक घटक को समझने में सहायता के लिए बैलेंस स्कोरकार्ड का उपयोग कर रहे हैं तथा इसके साथ ही साथ उन व्यक्तियों के विकास के जरियों की पहचान भी कर रहे हैं। कुछ नियत उद्योगों में, व्यवसायिक रणनीतियों कुछ समय पर अस्पष्ट होती हैं तथा ये कई परिवर्तनशील वस्तुओं पर निर्भर होती हैं; इसलिए, इन स्थितियों में समय पर उत्तरदायित्व का निर्धारण करना आसान नहीं है। अंतत: इस प्रक्रिया में, प्रत्येक प्रकार्य पर लगे हुए कर्मियों के एक बड़े समूह की भागीदारी को शामिल किया जाता है, जिसमें मानव संसाधन / कार्मिक विभाग में कार्यरत व्यक्ति भी शामिल होते हैं, जो कुछ संगठनों में संगठन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के साथ मिलकर इस प्रक्रिया का संचालन भी करते हैं। जैविक प्रणाली की तरह ही उद्योग में जीवन की एक निश्चित अवधि होती है तथा यदि पुनर्व्यवस्थित अथवा नवीकरण करते हुए उचित रणनीतियों को उपयुक्त समय पर और सटीक उपकरणों के साथ उपयोग नहीं किया जाता हैं, तो वह बीमार हो जाएगा और फिर अधिग्रहित हो जाएगा अथवा समय से पूर्व मर जाएगा। इसलिए, यदि अपेक्षित हो, तो प्रत्येक संसाधनों का पुनर्मूल्यांकन और पुनर्गठन करना आवश्यक है, ताकि स्थानीय / राष्ट्रीय / वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी हो सकें तथा अपेक्षित गुणवत्ता मानकों

और सेवा स्तर को प्राप्त करते हुए, उन्हें सुनिश्चित किया जा सके, इसके साथ ही साथ लाभों को भी प्राप्त किया जा सके। उद्योग इष्टतम मानकों को प्राप्त करने के लिए न्यूनतम मानदंड का प्रयोग करते हैं; इसलिए, लक्ष्य का इस तरह से निर्माण किया जाना चाहिए कि वे न्यूनतम मानदंड के आंकड़ों को पूर्ण कर पाएं।

हम डिजिटल युग में जी रहे हैं। डिजिटल तकनीकें मूलत: उन तरीकों को प्रभावित कर रही हैं जिसमें सभी कर्मचारी आपस में संबंध स्थापित करते हैं। डिजिटल तकनीकों के बढ़ते प्रभुत्व के आधार पर यह शब्द सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से कहीं दूर तक अपनी पहुंच बना चुका है। इसने, विशिष्ट रूप से अलग दृष्टिकोण, व्यवहार और अपेक्षाएं रखने वाली एक नई पीढ़ी का निर्माण किया है। वैश्वीकरण ने परिचालन सीमाओं और वैश्विक संगठन की परिस्थितियों में भी उल्लेखनीय बदलाव किए हैं। एचआर प्रकार्य, अतीत के मुकाबले कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से वैश्विक संगठन में अपनी भूमिकाओं को निभा सकता है। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप अधिक चुनौतियां भी सामने आ सकती हैं, जिनका उपयोग हमारे द्वारा अवसरों के रूप में किए जाने की जरूरत है।

कृत्रिम बुद्धि, ब्लॉक चेन, क्राउड सोर्सिंग, क्लाउड कंप्यूटिंग, कुछ प्रचलित तकनीकें जैसे एसएमएस, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, लिंक्ड इन स्काइप, फेस टाइम का उपयोग कर्मचारियों की प्रतिभा को खोजने में किया जा सकता हैं अथवा इसके साथ ही साथ भर्ती, साक्षात्कार संपर्क, पेपरलेस कार्यालय, सरल संचार-व्यवस्था, विश्लेषण एवं विज्ञापनों के लिए भी इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए, स्वयं को अपडेट रखने की आवश्यकता है।

नई पीढ़ी के दृष्टिकोण में आए अतिवादी परिवर्तनों, वृद्धावस्था आश्रमों में हो रही वृद्धि, निजी बातचीत में होने वाले अभाव तथा खत्म होते रिश्तों से उत्पन्न हुई कुछ ऐसी चुनौतियों हैं, जिनका सामना करना है। दृढ़ विश्वास का साहस तथा मौलिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता चुनौतियों के सामने आने पर उनका सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान करेगी। यह कठोरता की वकालत नहीं है अपितु स्वयं को किसी दूसरे आदमी की स्थितियों का सामना करते हुए, अपने खुद के ठहराव को महसूस करना है।

आकांक्षा
पुत्री - डॉ. गौतम कुमार मीना
सहायक प्रबंधक
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

बेटियाँ

माँ के संस्कारों की मिट्टी से बनी होती है बेटियाँ ।।

पिता की शान और माँ का अरमान होती है बेटियाँ ।।

तुलसी की पवित्रता का अहसार होती है बेटियाँ ।।

आंगन में लगाओं या बिगया में सदाबहार होती है बेटियाँ ।।

एक नहीं दो घरों की आन, बान और शान होती है बेटियाँ ।।

मंदिर की घण्टी जैसी मधुर झंकार होती है बेटियाँ ।।

माता-पिता और परिजनों के अरमानों का साजों सामान होती है बेटियाँ ।।

सृष्टि (ईश्वर) का सबसे बड़ा वरदान होती है बेटियाँ ।।

संगीता श्रीवास्तव
प्रबंधक (राजभाषा)
इरेडा

'चाँद'

प्यारी सी, मीठी सी, रोशनी हो तुम,
ऐ चाँद, तुम उस पार, जाया ना करो
कभी इस जहाँ के, कभी उस जहाँ के
अंधेरोंको मिटाने में,
यूँ खुद को, पिघलाया ना करो
सभी तो राह देखते रहते है,
रात की झीनी चादर में लिपटे,
तुम्हारी शीतल छाया में, सोने को
आतुर रहते है, पर
तुम भी क्या करो ?
चाहते हो, सबको अपनी चाँदनी में भिगोना
और इसी चाहत में यूँ
घटते-बढ़ते तुम
कभी अमावस में गायब, तो कभी पूनम की रात में,
फलक पर बिछ जाते हो तुम
और हर राही को, रात की स्याह चादर में
सिमटे-सिमटे, सूखे पत्तों की सरसराहट
सुनते-सुनते, एक आशाभरी चाँदनी में,
नहला जाते हो तुम

प्रवीण कुमार
कनिष्ठ अभियंता/ट्रैक मशीन
इरकॉन इन्टरनेशनल लिमिटेड

आयोजित की गई प्रतियोगिता के माध्यम से चुना गया सर्वश्रेष्ठ 'इरकॉन गीत'

'इरकॉन की चाहत – विकसित भारत'

आधारशिला रख दी विकास की अब देश उन्नति पायेगा
इरकॉन की चाहत-विकसित भारत
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

अपने तकनीकी कौशल से देश का मान बढाया है ।
विदेशों में परचम भारत का इरकॉन ने ही लहराया है ।।
भारतीय रेल का महान अनुभव विश्व को ये दिखलाएगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।

भारतीय रेल निर्माण कंपनी सन् 76 में आयी ।
माइलस्टोन रेल मंत्रालय की इरकॉन है कहलायी
आधुनिक अवसंरचना से अब देश की दशा सुधारेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।

देश के हर छोटे हिस्से को महानगरों से जोड़ रहा
रेल राजमार्ग बनाके इरकॉन फासले तोड़ रहा
उत्तम गुणवता युक्त कर्म से एक नया भारत बनायेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

हिम पर्वतों का चीर के सीना लम्बी सुरंग बनायी
सबसे बड़ी परिवहन योजना पीर पंजाल से आयी
ऐसी असीम चुनौतियों से अब यह नहीं घबरायेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

रेल सड़क का अद्भूत संगम गंगा नदी पर किया साकार
आवागमन की हर बाधा को इरकॉन ने है किया स्वीकार
भारत की तकनीकी महत्ता सारा संसार ही गायेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा

भैरब ब्रिज और अटल सेतु ने तकनीकी का प्रमाण दिया
सकल विश्व के महाद्वीपों में उच्च गुणवत्ता से काम किया
रेल और निर्माण से जग में भारत को पहचान दिलाएगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

विश्व में ख्याति भारत की हो संकल्प ये मन में ध्याया है
सुस्वास्थय और कौशल विकास अब हर घर तक पहुँचाया है
स्वच्छ भारत निर्माण का सपना पुरा करके दिखायेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

जहां सम्पूर्ण सहयोग मिले और सुरक्षा प्रथम रहे
है यही अनमोल जगह जहां प्रेम से मिलके कर्म करें
महिला कौशल विकास से भी अब इनको सम्मना दिलाएगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

अटल सिद्धांत और नयी सोच से भ्रष्टाचार का निर्वाण किया
छिपी प्रतिभा को पहचाना उत्तम मुल्यों का प्रमाण दिया
'मेक इन इंडिया' को साकार कर विकास की गति बढ़ायेगा
इरकॉन प्रगति लाएगा ।।

इरकॉन की चाहत –विकासित भारत
इकॉन प्रगति लाएगा ।

****

जयश्री सबनानी
वरि. राजभाषा अधिकारी
मेकॉन लिमिटेड

प्रदूषण उन्मूलन दोहे

शुद्ध नहीं आबो-हवा दूषित है आकाश,
सभ्य आदमी कर रहा, स्वयं सृष्टि का नाश ।।

ओज़ोन परत गल रही, प्रगति बनी अभिशाप,
वक्त अभी है समझिए, पछताएँगे आप ।।

नियमित गाड़ी जाँच हो, तो प्रदूषण न होय,
अर्थ दंड से भी बचे, सदा चैन से सोय ।।

दूषित जल से हो रही, मछ्ली भी बैचैन
हैरानी इस बात से मानव मूँदे नैन ।।

सूखा-बाड़-अकाल है, कुदरत का आक्रोश,
किया प्रदूषण अत्यधिक, मानव का है दौष ।।

ग्लोबल वार्मिंग कर रही , सभी को सावधान,
प्रदूषण पर लगाम कस , मत बन तू नादान। ।।

अंत निकट संसार का सूख रही है झील,
दूषित है वातावरण, लुप्त हो रही है चील ।।

अल्का कुमार
सहायक प्रबन्धक (मा सा)
इरेडा लिमिटेड

अंधविश्वास – एक रोग है

अपने पड़ोस का बंटी
रोज़ बजाता है मंदिर की घंटी ।
उसको है यह अंधविश्वास
कि भगवान करा देंगे उसे पास ।
इसलिए पढ़ाई न करके मंदिरों में चढ़ाता तेल,
अंत में हो गया वह फेल ।

राजू को लगता है, उस पर मंगल ग्रह है भारी,
इसलिए समस्याएं आती है उस पर सारी ।
गले में माला, हाथों में पहनता अगूँठी,
फिर भी उसकी किस्मत रहती उससे रूठी ।
स्कूल छोड़ दिया, रहता है अब अकेला,
सब्जियां बेचता है, लगाकर ठेला ।

लेट पहुँचने पर, पिंकी हमेशा स्कूल में डांट खाती है,
जब बिल्ली रस्ता काटती है, तो वह रूक जाती है ।
कोई छींक दे तो वह थम जाती है,
इतने में उसकी बस निकल जाती है ।
इतना करती है वह अंधविश्वास,
सारे छात्र उसका उड़ाते है उपहास ।

अंधविश्वास तो एक रोग है ।
यह मन का वहम और मनोरोग है ।
अंधविश्वास को दूर करता है विज्ञान
पढ़ो-लिखों और बढ़ाओं अपना ज्ञान ।
छोड दो ये पुरानी रीत,
क्योंकिअंधविश्वास रखता है हमें भयभीत ।

डॉ. हीरा मीना
पत्नी डॉ गौतम कुमार मीना
सहायक प्रबंधक
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

जिंदगी

प्यार और विश्वास पर चलती है, जिंदगी ।।
बड़ी तमन्नाओं और नेक इबादतों से मिलती है, जिंदगी ।।
सच्चाई और ईमानदारी के साथ खिलती है, जिंदगी
प्यार और इंतजार में निखरती है, जिंदगी ।।
जीवन के कठिन पलों में दुखती है, जिंदगी ।।
विश्वास और प्यार के बिना खून सोखती है, जिंदगी ।।
इंसान के कर्मों के निशा बनाती है, जिंदगी ।।
मैं अकेले नहीं तेरे साथ जीना चाहती हूँ, जिंदगी ।।
छू जाती है जिसे मौत की हवायें उसे बहुत अच्छी लगती हैं, जिंदगी ।।
हर पल को प्यार और विश्वास के साथ मैं भी जीना चाहती हूँ, जिंदगी ।।
अचानक आयी अनजान और सूनसान राहों पर डरती है, जिंदगी ।।
अपनों को प्यार और विश्वास हो तो हौसले बुलंद करती है, जिंदगी ।।
सालों से गुमनाम जीती आई हूँ, जिंदगी ।।
तुमने जैसा चाहा वैसी बनायी है, जिंदगी ।।
सीता, सावित्री, मेनका, मीरा और राधा नहीं बल्कि
मै जीवन संगीनी बन के जीना चाहती हूँ, जिंदगी ।।

इरेडा

मैं

वर्ष 2018 के दौरान

राजभाषा कार्यान्वयन

और

अनुपालन से

संबन्धित गतिविधियां

वर्ष 2017 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए इरेडा को नराकास, उपक्रम) दिल्ली (द्वारा सम्मान

16मार्च, 2018 को स्कोप कॉम्प्लेक्स , लोधी रोड, नई दिल्ली में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,) उपक्रम(, दिल्ली की 46वीं बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में इरेडा को "श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नराकास राजभाषा शील्ड "विशेष प्रोत्साहन" प्रदान करके सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर श्री प्रभास कुमार झा, भा.प्र.से., सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया तथा साथ में स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री पी.के.सिंह भी उपस्थित रहे । इरेडा की ओर से डॉ .पी .श्रीनिवासन, महाप्रबंधक) मा.संसा (.और सुश्री संगीता श्रीवास्तव , प्रबंधक) राजभाषा (ने नराकास राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र ग्रहण किया ।

इरेडा को 'कार्यालय दीप स्मृति चिह्न' पुरस्कार

इरेडा को राजभाषा हिंदी के अधिकतम प्रयोग के लिए सर्वोत्तम कार्यालय में 'कार्यालय दीप स्मृति चिह्न' पुरस्कार प्रदान किया गया । यह पुरस्कार राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 25-27 अप्रैल, 2018 के दौरान सोलन, हिमाचल प्रदेश में आयोजित 84वीं (प्लैटिनम जयंती+9) संगोष्ठी में दिया गया ।

साथ ही हिंदी कार्यशाला के दौरान "आज के बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी" एवं इरेडा में हिंदी कार्य की प्रगति के विषय पर इरेडा के श्री नरेश वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन) को आलेख प्रस्तुतिकरण पर द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

दिनांक 16 मार्च, 2018 को **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली** द्वारा आयोजित **46वीं बैठक** में श्री प्रभास कुमार झा, भा.प्र.से., सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार तथा स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री पी. के. सिंह द्वारा इरेडा को राजभाषा के क्षेत्र में वर्ष-2017 हेतु ***उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए "विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार एवं शील्ड" प्रदान करके सम्मानित किया गया ।*** इसके साथ ही इरेडा के अधिकारी **श्री पीयूष कुमार अरोड़ा, सहायक प्रबंधक ने ईआईएल** में आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में **तृतीय स्थान प्राप्त** किया ।

हिंदी कायर्शाला का आयोजन

'कम्प्युटर पर हिंदी में कार्य करने में आपकी समस्याएं एवं उनका समाधान' विषय पर 10अप्रैल, 2018 को इरेडा, कॉर्पोरेट कार्यालय के बोर्ड रूम में हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला की शुरूआत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक - मा.सं.,राजभाषा द्वारा संकाय श्री केवल कृष्ण, वरि .निदेशक तकनीकी, एनआईसी, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के स्वागत से की गई । उसके उपरांत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक मा.सं-.राजभाषा द्वारा कार्यशाला संकाय का परिचय कराया गया ।

इस अवसर पर इरेडा के हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे । कार्यशाला श्री केवल कृष्ण, वरि .निदेशक तकनीकी, एनआईसी, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा संचालित की गई । कार्यशाला में भाग लेने वाले इरेडा के अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयी काम-काज में कम्प्युटर पर हिंदी में कार्य करने में शामिल तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी गई और भाषा अनुवाद, स्पीच टू टेक्स्ट एवं अन्य तकनीकी टूल्स तथा पहलुओं के बारे में इरेडा कर्मियों को अवगत कराया गया ।

कार्यशाला सत्र के दौरान कम्प्युटर पर हिंदी प्रयोग में आ रही तकनीकी समस्याओं का समाधान बहुत ही रोचकता के साथ संकाय द्वारा किया गया और सत्र इंटरैक्टिव भी रहा। कार्यशाला के उपरांत इरेडा के उपस्थित कर्मियों द्वारा सत्र की सराहना की गई ।

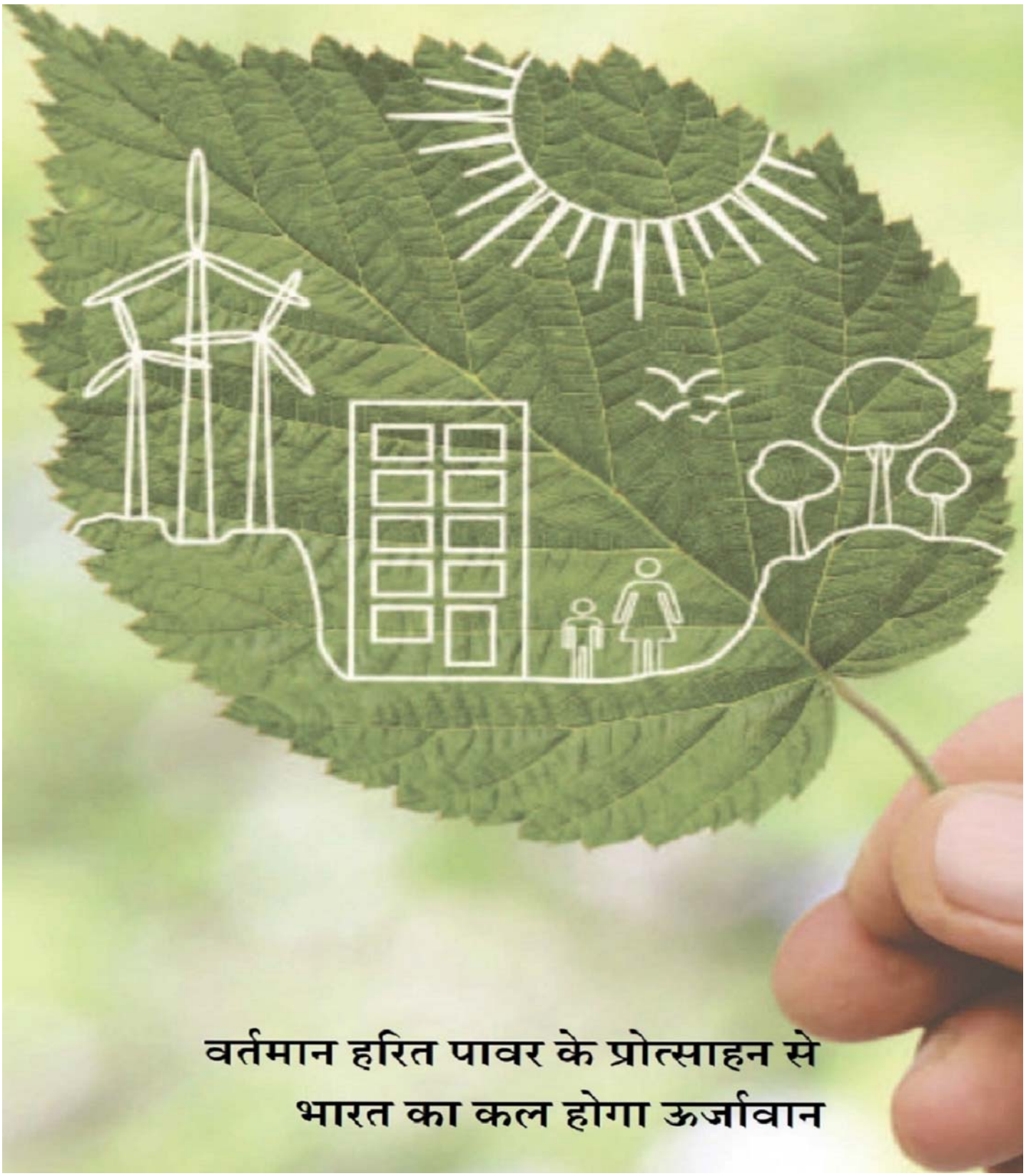

इरेडा
IREDA
[Mini Ratna Category-I PSU]
IS/ISO 9001 : 2008, 27001 : 2013 Certified

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन मिनी रत्न पीएसयू
www.ireda.in